दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 60* ❑ *अंक–12* ❑ *दिल्ली* ❑ *मार्च (द्वितीय) 2022* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

भारतीय इतिहास का उपेक्षित महानायक शहीद ऊधम सिंह

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारत का अब तक का इतिहास एक पक्षीय रहा है। यहां किसी व्यक्ति की वीरता या विद्वता का मापदंड यहां की वर्णव्यवस्था का आईना रहा है। इसीलिए द्विजवर्ण से हटकर अन्य वर्ण के व्यक्ति के पराक्रम और विद्वता का यहां मूल्यांकन ही नहीं किया गया। इसी एक पक्षीय आधार पर महापराक्रमी रावण, बाली, कर्ण, एकलव्य, शम्बूक, कंस के न्यायपूर्ण मूल्यांकन की उपेक्षा की गई और उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के विषय में विपरीत लिखकर इतिहास के साथ छल किया गया। केकैयी, मंथरा, भिलनी, तारा, मन्दोदरी, उर्मिला, सीता, गंधारी, रूकमणि, अहिल्या, द्रौपदी, संयोगिता ऐसी अनगिनत वीरांगनायें हैं जिन्हें इतिहास में न्याय नहीं मिला।

छोटे–छोटे राज्यों में बंटा भारत, कभी एक छत्र के नीचे सिमटा देश नहीं रहा। यहां पर हर छोटा राज्य एक देश था जिसका एक मात्र शासक उसका राजा या महाराजा था। उस समय राजा–महाराजा की झूठी यशगान करना और बदले में धन पाना चारण (भाट) और लेखकों का काम था। ऐसे में किसी भी राजा–महाराजा के सच्चे इतिहास को तलाशना अन्धेरे में प्रकाश खोजने के समान है।

भारत पर विदेशियों को आक्रमण करने के लिए किस–किस ने कब–कब न्यौता दिया, भारत आने पर किस–किस राजा– महाराजा ने उन हमलावरों की धन, अन्न और जन से मदद की, जिन्होंने उन्हें यहां के रास्तों, धन के भण्डारों और धार्मिक भावनाओं की जानकारी दी, भारतीय इतिहास इस पर अभी तक मौन है। झूठा जात्याभिमान, भोग विलासी जीवन और बदला लेने की भावना ही भारत की गुलामी के मुख्य कारण रहे हैं, जिन पर आज तक किसी भारतीय इतिहासकार ने कलम नहीं उठाई।

इस देश में राम और कृष्ण को क्षत्री राजकुमार होने के कारण समाज का सिरमौर बना दिया गया, वहीं आडम्बर, पाखण्ड, धर्मान्धता के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले कबीर और रैदास को शूद्र मानकर उनके समतावादी, मानवतावादी आन्दोलन को इतिहास में स्थान नहीं देकर कुचल दिया गया। पराधीनता के खिलाफ रैदास जी के अलावा यह न कहने की कब किसने हिम्मत की?

पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन का,
करे न कोई यकीन।।
पराधीनता पाप है,
सुन लेहो मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन से
करे न कोई प्रीत।।

यहां पर सीताहरण के समय पेड़–पौधों से सीता की जानकारी लेने वाले राम सर्वव्यापक, सर्वदर्शी राम बन गये, तपस्वी शबूंक की हत्या करने वाले राम मर्यादा पुरुषोत्तम राम हो गये, पेड़ के पीछे छिपकर छल से बाली को मारने वाले कायर राम महापराक्रमी राम बन गये, सीता की अग्नि परीक्षा लेने के बाद भी किसी अफवाह पर विश्वास कर अपनी स्वयं की पत्नी सीता को बिना उसकी कुछ सुने चुपचाप उसे वन भेजने वाले राम महान न्यायवादी हो गये। इसी तरह एकलव्य का बलपूर्वक अंगूठा काट लेने वाले द्रोणाचार्य, महान गुरु हो गये, अपनी आंखों के सामने एकलव्य का अंगूठा कटाने वाले अर्जुन महान धनुर्धारी हो गये, कर्ण को द्रोपदी स्वयंवर से बाहर करने वाले, कुरुक्षेत्र के मैदान में छलपूर्वक कर्ण से जान बचाने वाले पांडव महायोद्धा हो गये, यह सब एक पक्षीय दृष्टि रखने वाले लेखकों का ही काम है।

मुगलों को अपनी बहन–बेटियों के 'डोले' देने वाले 'महान राजपूत' कैसे हो गये? अपनी बेटी का अपहरण का बदला लेने वाला जयचन्द "गद्दार'' और ''देशद्रोही'' कैसे हो गया? राजा बलि को छल से छलने वाला "बौना विष्णु भगवान कैसे हो गया? हिरण्यकश्यप को छल से मारने वाले और होलिका को छल से जलाने वाले कैसे पूजनीय हो गये? पत्नी द्रौपदी को जुए में दाव पर लगाने वाले युधिष्ठर 'धर्मात्मा' कैसे हो गये?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

बसपा–डुबने के कगार पर–जिम्मेदार कौन?

अभी–अभी देश के पांच राज्यों के चुनाव सम्पन्न हुए है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर, गोवा व पंजाब। इनमें सबसे ज्यादा 403 विधानसभा सीट होने के कारण उत्तर प्रदेश विशेष रूप से प्रमुख है। इसी प्रदेश की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो बहन मायावती चार बार मुख्यमंत्री रहीं। एक बार उसने समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ मिलकर सरकार बनाई और दो बार भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के साथ मिलकर सरकार बनाई और स्वयं मुख्यमंत्री बनीं। 2017 से उत्तर प्रदेश में भाजपा (बीजेपी) की सरकार है जिसके मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी हैं। 5 साल भाजपा सरकार के खत्म होने पर ये चुनाव आयोजित किये गये। उत्तर प्रदेश में जहां शासन आरूढ़ भाजपा ने कई छोटे–छोटे दलों को मिलाकर लड़ा, वहीं समाजवादी पार्टी (सपा) ने भी कई छोटे दलों से गठबन्धन कर चुनाव में ताल ठोकी, वहीं बसपा की सुप्रीमो बहन मायावती ने बिना किसी गठबन्धन के इस उत्तर प्रदेश के चुनाव में प्रदेश की सभी 403 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। बहन मायावती ने प्रेस कान्फ्रेंस करके बार–बार कहा कि पूरे प्रदेश में उनका मजबूत 'कैडर' है, बसपा के जुझारू कार्यकर्त्ता हैं, और सभी जातियों का संख्याबल और जाति समीकरण देखकर ही बसपा ने अपनी अकेले की ताकत पर विश्वास करके उम्मीदवारों को चुनाव में उतारा है, जिनके चुनाव जीतने की सौ फीसदी उम्मीदें हैं। मुझे अपने बहुजन समाज पार्टी के 'कैडर' और कार्यकर्त्ताओं पर पूरा भरोसा है, इसलिए चुनाव में मुझे ज्यादा चुनाव रैलियां, सभा सम्मेलन करने की जरूरत नहीं, वैसे भी मैं अपने 'कैडर' के अलावा किसी से मिलती भी नहीं और न किसी सामाजिक कार्यों में शामिल होती हूं।

चुनावी महाभारत में हमने देखा कि जहां भारतीय जनता पार्टी और समाजवादी पार्टी ने इस चुनाव को अपनी इज्जत व सम्मान की लड़ाई के रूप में लड़ा, अपनी पार्टी भाजपा को जिताने के लिए स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे प्रदेश में जनसभा और चुनाव रैलियां करके पसीना बहाया, वहीं पूरे चुनाव के दिनों में केवल आगरा में एक चुनावी सभा करने के बाद मायावती किसी भी चुनाव क्षेत्र में नजर नहीं आई, और न ही इस चुनाव को अपने आत्म सम्मान की लड़ाई मान कर ही लड़ा। बहनजी का तो कहना था कि पूरे प्रदेश में मेरा (बसपा) का 'कैडर' पूरे दमखम से चुनाव लड़ रहा है, इसलिए मुझे चुनाव में बसपा के उम्मीदवारों के लिए कोई सभा–सम्मेलन करने की जरूरत नहीं। चुनाव मेरा बसपा का 'कैडर' लड़ रहा है, मुझे पूरा यकीन है कि बसपा दो–तिहाई सीटें मिलने पर हम अकेले ही उत्तर प्रदेश में सरकार बना लेंगे।

उत्तर प्रदेश के सात चरणों में चुनाव खत्म हुए। 10 मार्च, 2022 को वोटों की गिनती शुरू हुई। जब चुनाव परिणाम आये तो भारतीय जनता पार्टी 273 सीटें जीत गई। समाजवादी पाटी (सपा) को 125 सीटों पर विजय मिली। वहीं बहन मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का सूपड़ा साफ हो गया। उसे 403 सीटों में से सिर्फ 1 सीट ही मिल पाई। बहन मायावती के बड़बोलेपन, अहंकार और झूठे अहम् की पोल पट्टी इस चुनाव ने खोल दी। सबसे ज्यादा धक्का उन लोगों

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य (शेष पृष्ठ 4 पर)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, मो. 9810278936, 9891989175

सम्पादकीय का शेष .... बसपा–डुबने के कगार पर–जिम्मेदार कौन?

को लगा जो मान्यवर कांशीराम के अधूरे मिशन को पूरा करने में लगे थे और उनके अधूरे सपनों को पूरा करना चाहते थे। वे जोर–शोर से कहा करते थे–

'मा. काशीराम की नेक कमाई।
तूने सोती कौम जगाई।' पर यहां तो अब उन्हें सब उल्टा–पल्टा ही दिखाई दिया। अब वे गुस्से में चिल्ला रहे थे–

'मा. काशीराम की नेक कमाई।
भाई–भतीजों ने बेच खाई।'

10 मार्च को मतगणना के बाद चुनाव परिणाम अपने विरुद्ध आने पर 11 मार्च को 'कोपभवन' से बाहर निकलकर अगले दिन बहन मायावती ने प्रैस कान्फ्रेंस करके मीडिया के आक्रमक प्रचार को दोषी ठहराते हुए कहा कि उसने मुसलमानों और भाजपा विरोधी मतदाताओं को दूर करने के लिए बसपा को भाजपा की 'बी–टीम' बताया।

बहन मायावती ने कहा कि मुस्लिम समाज ने उत्तर प्रदेश में बार–बार अजमाई पार्टी बसपा से ज्यादा समाजवादी पार्टी पर भरोसा कर बड़ी भारी भूल की है। बसपा मुस्लिम समाज के इस रुख से सीख लेकर अब अपनी रणनीति में बदलाव लायेगी।

बहन मायावती ने कहा कि चुनाव में पूरे उत्तर प्रदेश से जातिवादी मीडिया अपनी गन्दी साजिशों, प्रायोजित प्री–पोल सर्वेक्षण तथा लगातार नकारात्मक प्रचार से खासकर मुस्लिम समाज और भाजपा विरोधी हिन्दू समाज के लोगों को गुमराह करने में सफल रही कि बसपा, भाजपा की 'बी–टीम' है।

बहन मायावती ने कहा कि अगर मुस्लिम समाज का वोट दलित समाज के वोट के साथ मिल जाता तो जिस तरह से बंगाल के चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के साथ मिलकर भाजपा को धराशायी करने का चमत्कार हुआ था वैसा चमत्कार उत्तर प्रदेश में भी दोहराया जा सकता था, पर जातिवादी मीडिया ने यह सब खेल बिगाड़ दिया। मेरी हार के लिए 'मीडिया' दोषी है। उसके गलत प्रचार से हमारा मुस्लिम वोट छिटक गया, जबकि मेरी जाति का 'वोट' आज भी मेरे साथ है और मुझे मिला है।

इस प्रैस कान्फ्रेंस में बहन मायावती ने अपनी हार का ठीकरा–मीडिया पर फोड़ा है जिसके दुष्प्रचार से मुसलमान वोट उससे छिटककर समाजवादी पार्टी (सपा) को चला गया, वरना मुसलमान वोट एक थोक में मिलने पर वह भी बहन ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस की तरह बम्पर जीत पाकर उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बन गई होती।

बहन मायावती की हताशा, अहंकार, भ्रम और मिथ्यानुमान इससे स्पष्ट झलकता है, पर अपनी हार का ठीकरा मीडिया पर फोड़ने के बजाय उसे अपने अन्दर झांककर विचार करना होगा। अगर वह मान्यवर काशीराम की अपने को सच्ची उत्तराधिकारी मानती है तो उसे अपने अहंकार, मिथ्याभिमान, सत्ता–लोलुपता को दूर रखकर सोचना होगा कि–

1. मान्यवर काशीराम ने बामसेफ, डीएस–4 और बसपा की स्थापना के साथ प्रण लिया था कि अब उनका न कोई परिवार से नाता है, न कोई घर बार, न बैंक खाता या न जमीन जायदाद। दलित समाज ही उनका परिवार, घर बार है और उनके साथ दलित आन्दोलन में लगे सभी भाई–बहन हैं। उन्होंने पूरे जीवन में शादी नहीं करने प्रण लिया जिसे मरने तक निभाया।

2. मान्यवर जी, ने सरकारी नौकरी छोड़कर बहुजन समाज के नायकों–महात्मा जोतिबा फुले, रामास्वामी पेरियार, बाबा साहब डा. अम्बेडकर तथा गुरू रविदास, संत कबीर, गुरू घासीदास, संत नामदेव आदि समतावादी सन्तों के समतावादी दर्शन को घर–घर पहुंचाने और बहुजन समाज को संगठित कर एक मंच पर लाने का संकल्प लिया था, इसके लिए उन्होंने साईकिल पर अपने दलित कार्यकर्त्ताओं के साथ घर–घर प्रचार किया और दलित बहुजन को उनकी शक्ति का अहसास कराया।

3. मान्यवर काशीराम जी का सपना साकार हुआ और पहली बार 1991 में उन्होंने उत्तर प्रदेश का चुनाव जीतकर बहुजन समाज की सरकार बनाई और संसद में अपने नुमायन्दे भेजे। तीन बार उन्होंने कु. बहन मायावती को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया। वे स्पष्टवादी थे और उन्होंने–

'तिलक तराजु और तलवार–
इनको मारो जूते चार
बामन बनिया राजपूत छोड़,
बाकी है डीएस–4'

जैसे नारे देकर दलितों में स्वाभिमान जगाया।

4. मान्यवर काशीराम ने जहां सामाजिक, राजनीतिक संस्थायें बनाईं, वहीं अपना दलित मीडिया खड़ा करने के लिए हिन्दी व अंग्रेजी में समाचार पत्र निकाले और 'चमचा युग' जैसे कई पुस्तकें लिखीं।

5. मान्यवर काशीराम अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक कभी भी न तो सवर्ण नेताओं के आगे झुके और न ही उन्होंने बहुजन समाज के स्वाभिमान के साथ सौदा किया।

6. उन्होंने कु. बहन मायावती को अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए बसपा की कमान उन्हें इस आशा के साथ सौंपी थी कि वह उनकी तरह बहुजन समाज के उत्थान के लिए सामाजिक व राजनीतिक कार्य करेगी और अपने कार्यकर्त्ताओं को बराबर का सम्मान देंगी।

पर, मान्यवर काशीराम जी के परिनिर्वाण होते ही बहन मायावती

ने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को सर्वजन समाज पार्टी बना दिया। इससे 'सर्वजन समाज' को 'बहुजन समाज' से ज्यादा तरजीह दी जाने लगी। सत्ता के साथ बहन मायावती ने अपने परिवार को जोड़ लिया। भाई–भतीजों के परिवारों को करोड़ों रुपये की सम्पत्ति व बैंक खातों के आरोप बहन जी पर लगे। इससे उन पर सी.बी.आई. के जाल में फंसने की कार्रवाई की गई। उससे छुटकारा पाने के लिए बहन जी ने बसपा की तेज धार को कुन्द करना शुरू किया। उन्होंने सतीश चन्द्र मिश्रा पर पूरा विश्वास कर उन्हें पार्टी का महामंत्री व सांसद बनाया, और इस तरह वह बसपा के एक तरह से कार्यकारी अध्यक्ष वह बन गये। उन्हीं की सलाह पर बहन जी ने 'बहुजन समाज' को छोड़ 'सर्वजन समाज' के सिद्धान्त को तरजीह देकर ब्राह्मण सम्मेलन शुरू किये, जहां 'हाथी' चिन्ह के साथ 'गणेश' को भी तरजीह दी गई–'हाथी नहीं गणेश है, ब्रह्मा विष्णु महेश है।' बहन जी ने अपने भाई–भतीजे को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर 'बसपा' के संचालन का भार भी उन्हें सौंप दिया।

बहन मायावती ने मा. काशीराम जी के सिद्धान्त, सोच, विचार, संकल्प के खिलाफ तो काम किया ही, अपने ऊपर लगाये सी. बी.आई. के आरोपों के बचाव में एक तरह से सत्तारूढ़ पार्टी की सरकार के सामने एक तरह से समर्पण कर दिया। इससे वह सरकार के दलित विरोधी कारनामों के खिलाफ बोलने या विरोध करने से बचती रहीं। हाथरस, उन्नाव लखीमपुरखीरी में दलितों पर हुए अत्याचारों के विरोध में न वे कभी बोलीं और न ही घटनास्थल पर गईं।

बहन जी के इस रुखेपन व उपेक्षा से दलित समाज का बहन जी और उनकी बसपा पार्टी से मोहभंग होना लाजमी था। मुस्लिम समाज अपने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक उत्पीड़न से परेशान है। हर रोज हिन्दुओं का उत्पीड़न उन्हें सहना पड़ता है। ऐसे में बहन जी, थोक में उनके वोटों की आस तो लगाती हैं पर उनके दुख–दर्द और उत्पीड़न में हमदर्दी के दो शब्द भी न बोले तो वे कब तक बहन जी की 'बसपा' पार्टी से बंधे रहते? ऐसी स्थिति में अपना सारा दोष और गुस्सा मुसलमान समाज पर निकालना और उन पर 'हार' का ठीकरा फोड़ना उचित नहीं है। मुसलमान और दलित बहुजन बहन जी के आसरे पर कब तक बैठे रहेंगे जबकि बहन जी लखनऊ के अपने किले से बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं। ऐसे में उन्हें जहां सुरक्षा, प्यार और सहारा मिलेगा, वहीं वे जायेंगे। सो, इस चुनाव में उन्होंने ऐसा ही किया।

जहां तक बहन जी के मीडिया का दोष देने का है कि उसने उसकी पार्टी को बीजेपी की 'बी. टीम' बताकर प्रचार किया, तो बहन जी ने सामने आकर उसका विरोध क्यों नहीं किया? मीडिया को तो जो दिखाई दिया और उसे जो अहसास हुआ, वैसा उसने किया।

इस चुनाव में बहन जी ने कहीं भी, कभी भी बीजेपी का खुलकर न विरोध किया, और ना ही उसकी आलोचना की, वह तो ममता बनर्जी की तरह चुनाव जीतने की बात करती हैं, पर क्या वह उसकी तरह एक–डेढ़ महीने घायल होने पर भी अपनी तिपाइया साईकिल पर बैठकर चुनाव में डटे रहने के लिए उसकी बराबरी कर सकती है? उसने तो बंगाल के चुनावों में अकेले ही भाजपा के पूरे चुनावी तंत्र का मुकाबला किया और चुनाव जीता। बहन मायावती जी, 'पर अब क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। अब भी समय है अपने अन्दर झांककर अपनी गल्तियों पर पुनः विचार करने का, और मा. काशीराम के सिद्धान्तों को अपना कर उनके अधूरे सपने को पूरा करने का। वरना अब बहुजन समाज ही क्या, उनका जाटव रविदासिया समाज भी जाग गया है और उसकी नई पीढ़ी अब किसी भुलावे में आने वाली नहीं।

बहन मायावती को अब अपने तौर–तरीके बदलने होंगे। उन्हें अब कार्यकर्त्ताओं के बीच आकर संघर्ष करना होगा। उनहें अपने जन्मदिन के नाम पर होने वाली 'उगाही' पर रोक लगानी होगी। ''मैं जिन्दा देवी हूं आपको जो चढ़ावा चढ़ाना है, मुझ पर चढ़ायें'' जैसी मानसिकता को त्यागकर अपना 'दलित मीडिया' स्थापित करना होगा जिसके माध्यम से वे बहुजन की लड़ाई लड़ सकेंगे। बिना संघर्ष के अपने महल में रहकर अब चुनावी लड़ाई नहीं जाती जा सकती। •

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

क्या हुआ?

मेरे लोग, आज भी, गुलाम हैं
बेगार ढोते हैं,
गुलामी करते हैं समाज में
समृद्ध जनों की
कुछ धनसम्पन्न हो गये तो क्या हुआ?
मेरे लोग, आज भी चौबीस घंटे
तामीरदारी करने के बावजूद
एक जून भूख सोते हैं
उनके बच्चे,
कुपोषण के शिकार हुए
भूखे मरते हैं
वे, बिना दवादारू के
जवानी में ही चल बसते हैं
कुछ के पेट भर गये तो क्या हुआ?
मेरे बच्चे, बचपन में ही
झोंक दिये जाते हैं,
कारखाने–फैक्टरियों में
या फिर, होटल, ढाबे,
चाय की दुकान में काम करने को
पेट की आग बुझाने को, अपनी
और अपने परिवार के लोगों की
इनमें कुछ प्राइमरी तक पढ़ गये तो
क्या हुआ?
हम समाज की नींव हैं
अर्थ–व्यवस्था की रीढ़ हैं
देश के आधार हैं
फिर भी बेकार हैं, लाचार हैं
सभी हमें ही रोंदते हैं,
सभी हमें ही नोचते हैं
समाज से भी दुत्कार है,
धर्म से भी लताड़ है
फिर भी कुछ आगे बढ़ गये तो
क्या हुआ?

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

('अन्धा समाज और बहरे लोग' पुस्तक से)

विद्यार्थी दिवस मनाएं या गैरबराबरी खत्म करें

प्रो. (डा.) श्यौराज सिंह 'बेचैन'
हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय

यदि हम कहें कि यह, 'बर्थडे', 'वैलेंटाइनडे' मनाने की परंपरा केवल पश्चिम से आई है, तो हम भूल करेंगे। क्योंकि 'तखती–पूजना', 'पुस्तक–पूजना', 'कलम–पूजना', 'विद्यालय प्रवेश दिवस' की पूजा करने की प्रथा हमारे देश में बहुत प्राचीन है।

हाल ही में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने एक ऐसे विद्यार्थी की ओर ध्यानाकर्षित किया है, जो निर्विवाद रूप से विद्या के प्रति विशेष आग्रही रहे। महामहिम राष्ट्रपति ने कहा है–''डॉ. भीमराव अम्बेडकर के योगदान को याद करने के लिए 'सात नवंबर' को देश भर में 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जाना चाहिए।'' महाराष्ट्र के स्कूलों में विद्यार्थी दिवस के रूप में यह पहले से ही मनाया जाता है। विद्यार्थी अम्बेडकर ने औपचारिक रूप से 'सात नवंबर 1900' को स्कूल में प्रवेश लिया और विद्या के प्रति अभूतपूर्व समर्पण प्रकट किया।

'विद्या–विकास' की दृष्टि से यह एक सार्थक व प्रेरक पहल है। बेशक पूजने से ज्यादा जरूरी होता है, पुस्तक का रचा जाना और पढ़ा जाना। ठीक उसी तरह हमारे महापुरुषों के जन्म दिन के बहाने उन्हें पूजने से ज्यादा उनके विचारों को मानना, जीवन में उतारना है।

किसी भी राष्ट्र की 'ज्ञान व्यवस्था' को समृद्ध करने में समर्पित विद्यार्थियों की आवश्यक्ता होती है, जो देश की बौद्धिक विरासत में अभिवृद्धि कर उसे अग्रसारित करते हैं।

ज्ञान की विविधता के मद्दे नजर, प्रेरक व अनुकरणीय दिवस मनाए जाने ही चाहिए। इसके बरक्स उस व्यक्ति के 'जन्म दिवस' का कोई मतलब नहीं है, जिसने धरती पर भार बढ़ाने के अलावा मानव सेवा के लिए कुछ नहीं किया।

जन्मदिन उस विचार का मनाया जाना चाहिए, जिसने जन्म दर नियंत्रित कर जनसंख्या के अनियंत्रित होते घनत्व को ब्रेक लगाया। प्रतिभा संपन्न व्यक्तियों के, आविष्कारकों के जन्मदिवस बनाये जाने चाहिए, जिन्होंने अन्न का, दूध का, दवा के उत्पादन बढ़ा दिये, आज हम अमरीका से लाल गेहूँ मंगाने को मजबूर नहीं हैं। हां, एक ओर भंडारों में सड़ता अन्न और 19 करोड़ लोगों का भूखा सोना। हमारे राष्ट्रीय विकास पर कैसा प्रश्न चिन्ह है? नेशनल हैल्थ सर्वे (2017) में दर्शाए 19 करोड़ लोग भूखे सोते हैं। उनका समाधान नहीं तो क्या उनके बच्चे 'विद्यार्थी' बनने की कल्पना भी कर सकते हैं? वे ऊपर से जाति–हिकारत जिससे शिक्षक भी नहीं बचे हैं विद्यार्थी के मार्ग की बाधाएं हैं। भूखे पेट तो भजन भी नहीं होता, अध्ययन कैसे होगा? ऐसे लोग जो रोटी दाल बांट कर जिंदाभर रखना चाहते हैं, क्वालिटी एज्युकेशन देकर उन्हें आत्मनिर्भर होते देखना चाहेंगे?

कोरोना की दो साल की मार में दैहिक दूरी ने शिक्षा की सौ साल से भी अधिक समय में हुई अभूत पूर्व क्षतिपूर्ति से बहिष्कृत रखे गए दलित बच्चों के जीवन बर्बाद हुए हैं। अस्पृश्यता में जो सोशल– डिस्टैंसिंग थी उसका प्रकटीकरण कितना घृणास्पद होता रहा है? वितरण व्यवस्था दुरूस्त हो तो हम दावा कर सकते हैं कि कोई भारतीय भूख से नहीं मरेगा। हम अन्न सड़ा देने वाली खाद्य सामग्री की 'जमा–खोरी' रोक सकें तो अन्न सड़ने की नौबत न आए।

जन्मदिवस उन माताओं–पिताओं का मनाया जाना चाहिए जो दूसरी बेटी पैदा हो गई तो वंश चलाने के नाम पर बेटे का इंतजार नहीं करते। जन्म दिवस उस नाकारा बेटे का नहीं मनाया जाना चाहिए, जिसे वह एहसास निकम्मा और नाकारा बना देता है कि जमीं–जायदाद का मालिक तो बेटा ही बनेगा। बेटियां तो आधा दर्जन हैं, और एक बीघा जमीन भी उन के नाम नहीं होगी। इसलिए बेटा अपाहिज की तरह बाप की कमाई बैठा–बैठा चरेगा।

कल्पना कीजिए बेटा राज कुमार की तरह पला, हर साल उसका जन्म दिन मनाया गया। धागे से उसकी लम्बाई–ऊंचाई मापी गई, धागे में गांठ लगाई गई और जोरदार उत्सव मनाया गया। जब कि यह उस पेड़ की तरह बड़ा हुआ जिसके बारे में कबीर ने कहा था–''बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर, पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।''

पढ़ाने–लिखाने की परवाह नहीं, पढ़ गए, ग्रेज्युएट क्या हुए अब तो बस्स 'आई.ए.एस.' बनना है। चाहे क्षमता है या नहीं, विषय बोध से वास्ता है या नहीं? अथवा उसमें डाक्टर, वैज्ञानिक, लेखक इत्यादि बनने की अलग आकार की प्रतिभा स्वीकार्य नहीं है।

जन्म दिन नई पीढ़ी का सबसे गर्मा–गर्म फैशन है, उत्सवों में सबसे ऊंचा है। शहरी परिवेश में पैदा हुए बच्चों के लिए तो अपने फ्रेंडस के बर्थडे मनाने से जरूरी तो अपनी बीमार जन्मदात्री मां का इलाज कराना भी नहीं है। इधर कुछ पैरेंट्स को लगता है, बच्चे का जन्म दिन नहीं मना तो उसकी समुचित परवरिश नहीं हुई।

परीक्षा में अच्छा परिणाम आए तो परिणाम का जन्मदिन मनाया जाए। परन्तु अंकवाद कोई ज्ञान के पैमाने नहीं हैं। देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट ने भी ऐसी

टिप्पणी की है कि अंकों की अधिकता प्रतिभा मापने का सही पैमाना नहीं है। हरित क्रान्ति का दिवस, 'धवल क्रान्ति' दिवस मनाया जाए। एक दिन ऐसा आए जो संपूर्ण साक्षरता का बर्थडे मनाया जाए। कोई सरकार यूपी, बिहार और मध्य प्रदेश को क्वालिटी एज्युकेशन के दायरे में ले आए, स्वतंत्र भारत में निरक्षरता के अंत का दिन आए, तो वह दिन हजार बार मनाया जाए। शिक्षा–साहित्य में 'विकासशील' देशों की तरह किताबें, स्कूलों, पुस्तकालयों, अख़बारों और पत्रिकाओं के जन्मदिन मनाए जाने चाहिए।

पैदा होने भर से किसी को जन्म दिन मनाने का हक मिले कोई तुक नहीं है। कोई भी दिवस मनाया जाना भी 'डैमोक्रेटिक' होना चाहिए। 'कुटुम्ब नियोजन' का सुझाव देने वाले डॉ. भीमराव की राय मान कर 'बर्थकंट्रोल करने वाले पहले उपाय–उपचार का जन्म मनाने का रिवाज आरम्भ होता तो जनसंख्या के घनत्व में कुछ कमी जरूर आती। राजा का बेटा न पढ़े, न कुछ करे तो गधा भी विरासत का ताज पहनेगा ही और उसका जन्मदिन मनेगा ही। लोकतंत्र में आम इंसान का बच्चा कुछ करेगा– धरेगा नहीं, तो किसी को क्या प्रेरणा देगा?

जब से फेसबुक, व्हाट्सअप आया है तब से लोग तरह–तरह के दिवस मनाने, मनवाने में सुबह से देर रात तक जुटे रहते हैं। किस ने लाइक किया और किस नालायक ने लाइक नहीं किया, देखते रहते हैं।

16 फरवरी, 2022 को हमने संत शिरोमणि 'रैदास जी' का जन्म दिवस मनाया है। निर्गुण संत–कर्म की सत्ता को महत्व देते हैं। अपने चिंतन में मानव कल्याण की सर्वोत्तम व्यवस्था की कामना करते हैं–

''ऐसा चाहूं राज मैं,
जहाँ मिले सबन को अन्न,
छोट बड़े सब सम रहें,
रैदास रहे प्रसन्न।''

रैदास ने यह कामना भौतिकवादी दार्शनिक कार्ल–मार्क्स के जन्म से पहले व्यक्त की थी।

भारत के संविधान में मानवाधिकार, मानव गरिमा, समता–स्वतंत्रता का विशेष ख्याल रखा गया है। गुरू रैदास जिस कल्याणकारी राज की कल्पना करते हैं, संविधान की प्रस्तावना में वह भाव एक संकल्प के रूप में 'हम भारत के लोग' का आदर्श है।

वैयक्तिक चिंता से इतर सामाजिकता सरोकारों के लिए जीना कवियों ने भी सार्थक बताया है। मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है ''यही पशु–आवृति है कि आप आप ही चरे, वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।''

'भारत के लोग' उस दिन को उत्सव का दिन क्यों न मनाएं जिस दिन राजशाही को तिलांजलि दे कर हमने लोकतंत्र दहलीज पर कदम रखा था, जहां कर्म की उपेक्षा और जन्म की प्रमुखता कायम थी। राजा का बेटा जन विरोधी, और अनुदार होता था तब भी वह राजा बन जाता था। हमारे देश में चुनाव की लोकतांत्रिक प्रणाली अस्तित्व में आई। वह पहला चुनाव, पहला चुना हुआ प्रतिनिधि कौन था? उस दिन का उत्सव मनाया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक संविधान का जन्मदिन 26 नवंबर, 1949 को हमें कुछ और सरल, सहज और व्यापक स्तर पर स्कूल कालेजों में मनाये जाने की जरूरत है।

यदि हम विद्यार्जन को विशेष महत्व देंगे, मतदाताओं को जागरूक कर सकेंगे, विद्या–संपन्न प्रतिनिधि भी मिल सकेंगे, जो संविधान संगत राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भूमिका अदा करेंगे। लोकतंत्र को भीड़तंत्र बनने से बचा सकेंगे। विद्या लकीर के फकीरों को 'कोई नृप होय हमें का हानि?' वाली व्यवसायी मानसिकता त्याग कर जिम्मेदार भूमिका निभाने योग्य बनाएगी।

देश में हजार विश्वविद्यालय हों, पचास हजार महाविद्यालय और लाख से ऊपर स्कूल हैं तो यह संख्यात्मक दृष्टि से बड़ी उपलब्धि है। जिस देश में करीब चार करोड़ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। पर दूसरे पहलू की कल्पना कीजिए, जिन स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की फीस आसमान छू रही हो, वहां कोई आज का 'अम्बेडकर विद्यार्थी' प्रवेश पा सकेगा?

क्या यह चिंताजनक नहीं है कि आज के बाल अम्बेडकरों का स्कूलों कॉलेजों से बीच में पढ़ाई छोड़ने की दर सबसे अधिक है। कई विश्वविद्यालय अपनी स्थापनाओं के पचास साल, पचहत्तर साल और सौ साल वे जन्म दिन मना रहे हैं। बतौर कुलगुरू अम्बेडकर को इनमें से किसी ने सम्मान नहीं दिया। सब वर्गों, सब धर्मों और सब जातियों से कुलगुरूओं ने विश्वविद्यालयों को सुशोभित किया। सभी सरकारों ने किसी भी अछूत को कुलपति न बना कर कुर्सियों को अशुद्ध होने से बचा लिया। इससे बड़ी उपलब्धि और क्या हो सकती है विश्वगुरूओं की सरकारों के लिए?

हम विद्यार्थियों की विद्या पर करोड़ों रुपया इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, रसिया के लिए निवेश करते हैं। विद्यार्थी अम्बेडकर समाज के जिस सोपान से आते हैं, उन पांच हजार विद्यार्थियों पर जितना निवेश होता है, प्रभुवर्ग के पांच विद्यार्थी उससे कहीं अधिक धन अमरीका, इंग्लैंड आदि देशों के शिक्षा संस्थानों को पहुंचाते हैं और अभिभावक उन्हें वहीं सेटल्ड होने देना चाहते हैं।•

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–
सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1,
दिल्ली-110009
मो. 9810278936,
फोन : 011-27421449

हिमायती
7 / मार्च (द्वितीय) 2022 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 16 मार्च, 2022

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

पृष्ठ 1 का शेष...भारतीय इतिहास का उपेक्षित महानायक शहीद ऊधम सिंह

इस देश में रामायण लिखने वाला आदि कवि बाल्मीकि अछूत कैसे हो गया और वर्णव्यवस्था का कट्टर समर्थक 'राम चरित मानस' का लेखक गोस्वामी तुलसीदास कैसे पूजनीय हो गया, जो जोर शोर से कहता है कि

पूजिये विप्र गुण ज्ञान हीना। पूजिये न शूद्र गुण ज्ञान प्रवीणा।।

आज गोस्वामी तुलसीदास का चित्र मंदिरों और घरों में सुशोभित है, वहां आदि कवि, हिन्दू धर्म की प्राण प्रतिष्ठा 'रामायण' ग्रन्थ के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि का चित्र हिन्दू मंदिरों और उनके घरों में क्यों नहीं है? ये सब एक पक्षीय दृष्टिकोण के परिचायक हैं। इसके पीछे सवर्ण लेखक और इतिहासकारों का संकीर्ण नजरिया है जो देश और समाज की अवनति के जिम्मेदार हैं। वो कौन सा नजरिया है जो विदेशी आक्रमणकारी हूण, कुषाण, लोदी, तुगलक, मुगल को विदेशी मानने को तैयार नहीं, पर अंग्रेजों को विदेशी करार देता है? पानीपत थानेश्वर, कुरुक्षेत्र के मैदान आज भी हिन्दू नेताओं से यह प्रश्न पूछने को अग्रसर हैं।

11 मई, 1857 को भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। कलकत्ता छावनी से, जहां मातादीन भंगी ने इस मंगल पाण्डेय के जात्याभिमान पर प्रहार करते हुए कहा कि मुझे छूने और पानी पिलाने से तुम्हारा धर्म नष्ट होता है, पर छावनी में जिन कारसूसों को तुम मुंह लगाकर खोलते हो, उनके सिरे पर गाय और सूअर की चर्बी लगी होती है, तब तुम्हारा धर्म भ्रष्ट नहीं होता? बस, आग की तरह यह खबर फैल गई, भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया, जो सारे देश में फैल गया। संकीर्ण मानसिकतावादी हिन्दू इतिहासकारों ने इस विद्रोह का सारा श्रेय मंगल पाण्डेय को देकर उसे हीरो बना दिया, असली हीरो मातादीन भंगी समय की परत में नीचे दबकर रह गया। स्वतंत्रता के इस आन्दोलन में और भी कितने ही दलित शहीद हुए पर इतिहासकारों के एक पक्षीय नजरिये ने उन्हें भुला दिया। आजादी की इस लड़ाई में वीरांगना झलकारी बाई ने झांसी में अंग्रेजों से लोहा लिया। पर श्रेय महारानी लक्ष्मीबाई को दिया गया। इसी तरह, बिरसा मुंडा, सिधू कुम्हार और अन्य कितने ही दलित समाज के युवकों ने अपने बलिदान दिये, पर संकीर्ण मानसिकता ने उनके नाम पर एक लाईन भी लिखना अपना कर्तव्य नहीं समझा।

अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ उन्नीसवीं सदी में भी कैसे असंख्य दलितों ने अपने जीवन बलिदान कर दिए, पर उनका नाम भारतीय इतिहास में ढूंढने को भी नहीं मिलता। अगर मिलता भी है तो बस बेमन से, अधूरा नाम वृतान्त। हमारे ऐसे ही अमर बलिदानियों में से एक प्रमुख नाम है सरदार ऊधम सिंह का, जिसे अंग्रेजों के जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकांड ने दहला ही नहीं दिया, अपितु उन बेकसूर, निरपराध, निहत्थे मासूम लोगों के, अंग्रेज डायर और ओडायर की बन्दूकों से छलनी हुए नरकंकालों ने अपने खून का बदला लेने के लिए बाध्य कर दिया।

सरदार ऊधम सिंह ने जलियांवाला बाग के नरसंहार का बदला लेने के लिए जो संकल्प लिया था उसे उसने लगभग 21 वर्षों का कठिन जीवन गुजार कर, विदेश में उन्हीं अत्याचारियों के शहर इंग्लैंड में अपनी गोली से मार कर पूरा किया। एक पक्षीय संकीर्ण नजरिये का ही यह परिणाम है कि जिस ऊधम सिंह को शहीद भगत सिंह और देशभक्त सुभाष चन्द्र बोस की श्रेणी में रखा जाना चाहिए था, वहां अछूत जाति का वीर होने के कारण उसे इतिहास में समुचित स्थान नहीं दिया गया।

स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद ऊधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर, 1899 में पटियाला राज्य (पंजाब) के जिला संगरूर के सुनाम गांव में एक दलित परिवार में हुआ। इनके पिता सरदार टहल सिंह और माता श्रीमती हरनाम कौर थीं। अमृत चखकर सिख धर्म अपनाने से पहले सरदार टहल सिंह का चूहड़राम और श्रीमती हरनाम कौर का श्रीमती नारायण देवी नाम था जो उत्तर प्रदेश के एटा जिला के पटियाली गांव से रोजगार की तलाश में सुनाम आकर बस गये थे।

अंग्रेजी सरकार द्वारा लगाये गये रोलट एक्ट का विरोध करने के लिए वैशाखी के दिन 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में अधिकांश दलित समाज के लोग थे जो खुलकर अंग्रेजी हकूमत के अन्याय का विरोध कर रहे थे। इसी सभा में 19 वर्ष का नौजवान ऊधम सिंह भी था जो पेड़ के ऊपर चढ़कर सारी कार्रवाई देख रहा था। चूंकि यह सभा अंग्रेजों के खिलाफ थी, इसलिए पंजाब के अंग्रेज गर्वनर सर माइकिल ओ डायर ने बिगेडियर जनरल ई.एच. डायर को विशाल सभा पर गोली चलाने का आदेश दिया। कुछ मिनटों में जनरल डायर ने हजारों देश भक्त लोगों को गोलियों से भून डाला। इस भीषण हत्या कांड से पेड़ पर बैठे ऊधम सिंह का दिल दहल गया और गुस्से से आंखों में खून उतर आया।

पेड़ से नीचे उतरकर उसने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने देशवासियों के लहू की एक–एक बूंद का हिसाब इस नरसंहार के दोषी अंग्रेज हत्यारों को मार कर चुकाऊंगा।

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में ऊधम सिंह को 21 वर्ष लग गये। उसने पंजाब का अपना घर छोड़ दुनिया की खाक छानी, भारत से मजदूर कुली बनकर दक्षिण अफ्रीका गया, वहां से पानी के जहाज में कोयला झोंकने की नौकरी कर अमेरिका पहुंचा, और फिर अमेरिका से लंदन पहुंचा। अपने संकल्प को पूरा करने के लिए इस बीच ऊधम सिंह ने कारपेंटरी–फर्नीचर की दुकान की, 'प्रताप' अखबार में पत्रकारिता की, नेशनल स्कूल में अध्यापक के रूप में अध्यापक,

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

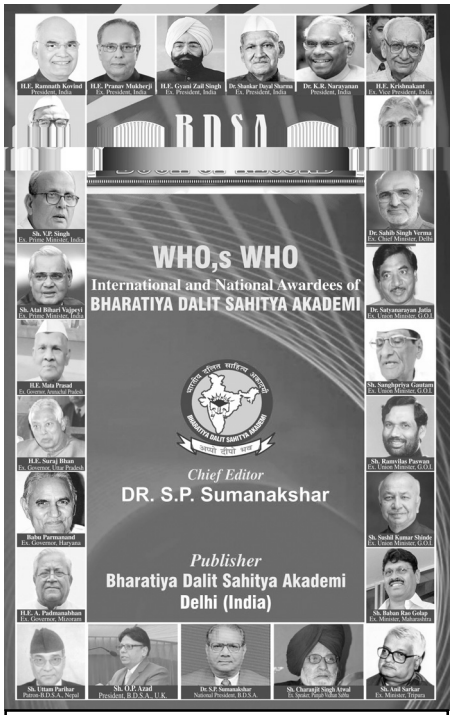

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्‌बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारिों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मोबाइल :
9891989175, 9810278936

रेडीमेड सिले सिलाये कपड़ों की फेरी लगाकर बेचने और लंदन में ही टैक्सी ड्राइवर के रूप में काम किया।

11 मार्च, 1940 को ऊधम सिंह को खबर लगी कि ''ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रायल एशियन सोसाइटी की सभा में 13 मार्च, 1940 को 3 बजे विक्टोरिया स्टेशन के पास के कस्टन हाल के टयूडर कक्ष में पंजाब के पूर्व गर्वनर सर माइकिल ओ डायर मुख्य अतिथि हैं। ऊधम सिंह इसी अवसर की तलाश में था क्योंकि जलियांवाला बाग कांड का एक अत्याचारी पूर्व ब्रिगेडियर जनरल डायर तो लकवा मार जाने से इंग्लैंड आकर पहले ही मर चुका था, पर अब प्रतीज्ञा पूरी करने के लिए सर माइकिल ओ डायर ही बचा था। जैसे ही सर माइकिल ओ डायर ने मंच पर अपना भाषण शुरू किया, ऊधम सिंह ने अपनी पिस्तौल उस पर दाग दी। दो गोलियां लगते ही सर माइकिल ओ डायर वहीं ढेर हो गया। ऊधम सिंह पकड़ा गया। उस पर हत्या का मुकदमा चला। 5 जून, 1940 को उसे मृत्यु की सजा सुनाई गयी और 31 जुलाई, 1940 को भारत मां के उस वीर सपूत को फांसी दे दी गई। पर ऊधम सिंह ने 13 अप्रैल, 1919 को जो प्रतिज्ञा की थी, वह उसने पूरी कर दिखाई।

ऊधम सिंह को मृत्युदंड से बचाने के लिए उनके देश–विदेश के मित्रों ने उच्च न्यायालय में अपील की, पर ऊधम सिंह ने उनकी प्रार्थना को बड़ी विनम्रता से अस्वीकार करते हुए कहा, ''मैंने एक हत्यारे को मारा है, और यह सिद्ध करना मेरा उद्देश्य था कि हिन्दुस्तानियों का खून इतना सस्ता नहीं था कि 12 हजार निरपराधी लोगों को कोई मार दे। और वह हत्यारा बचा हुआ घूमे। जलियांवाला बाग के हत्याकांड के दिन मैंने जो प्रतिज्ञा की थी कि मैं इस खून का बदला लेकर रहूंगा, मुझे खुशी है कि 20 साल 7 महीने के बाद आज वह प्रतिज्ञा मैंने पूरी की है।''

अन्त में उन्होंने हंसते हुए कहा कि ''सौ वर्ष तक दासता का जीवन बिताने के बजाय आजादी के लिए, देश के सम्मान के लिए, जवानी में ही शहीद होना मेरे लिए और मेरे देश के लिए गौरव की बात है।''

आज महान देश भक्त, अमर बलिदानी, दलित समाज गौरव सरदार ऊधम सिंह हमारे बीच नहीं है, पर उनका अमर बलिदान और भीषण प्रतिज्ञा हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009